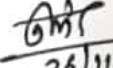


26.11.2019

पत्रावली पेश हुई। अधिवक्ता उभयपक्ष उप.। स्थगन प्रार्थना-पत्र मय शपथ-पत्र पर पूर्व में बहस सुनी गई। बहस सुनने एवं पत्रावली का ध्यानपूर्वक अवलोकन

करने पर न्यायालय इस निष्कर्ष पहुंचा कि अपीलांट का मूल वाद अधीनस्थ न्यायालय में विचाराधीन है। अपीलांट का वादग्रस्त आराजी में हिस्सा है या नहीं इस का निर्धारण वाद के निस्तारण पर ही संभव है। रेस्पोंडेंट वादग्रस्त आराजी का सद्भावी क्रेता एवं रिकॉर्डेड खातेदार है। रिकॉर्डेड खातेदार के विरुद्ध इंजेक्शन जारी करना न्यायसंगत नहीं है। मामला प्रथम दृष्टया एवं सुविधा का संतुलन अपीलांट के पक्ष में प्रतीत नहीं होता है। रेस्पोंडेंट संख्या 03 वादग्रस्त आराजी का रिकॉर्डेड खातेदार होने से उसके हक हिस्से की भूमि का बेचान करने का अधिकार रखता है। अधिवक्ता अपीलांट द्वारा पेश न्यायिक दृष्टांत अपील की स्थिति में लागू नहीं होते हैं मूल दावे से संबंधित है जो परीक्षण न्यायालय में विचाराधीन है। उपरोक्त विवेचन एवं पत्रावली पर उपलब्ध दस्तावेजात के आलोक में प्रकरण में अस्थाई निषेधाज्ञा जारी करना न्यायोचित प्रतीत नहीं होता है। अतः अपीलांट की अपील इसी स्टेज पर खारिज की जाती है तथा साथ ही अधीनस्थ न्यायालय को निर्देश दिये जाते हैं कि वाद की प्रक्रियागत कार्यवाही को अपनाते हुए मूल वाद का निस्तारण 03 माह में करे। पत्रावली फ़ैसल शुमार नंबर से कम होकर बाद तकमील दाखिल दफ़्तर में आदेश सरे इजलास सुनाया गया।


26/11/19
राजरव अपील प्राधिकारी
बाड़मेर



सेवानें